वर्ष - 3

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

अंक - 12

चहकती चेतना

प्रकाशक - कहानराज सर्वोदय ट्रस्ट, मुम्बई

संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

कविता

वीर प्रभु निर्वाण महोत्सव का मंगल दिन आयेगा।
दीवाली का पर्व अनूठा, शुभ संदेश सुनायेगा॥
शांत दिगम्बर मुद्रा प्यारी, परम अहिंसा के धारी।
सकल विश्व के पूज्य प्रभुवर, तुम हो सबके उपकारी॥
जियो और जीने दो का, मंगल मंत्र प्रदान किया।
सब जीवों को अभय दान दे, धर्म का बहुत प्रसार किया॥

सबको अपना जीवन प्यारा, जैसे हमको हैं प्यारे।
सत्य,प्रेम और न्याय अहिंसा के सिद्धांत मिले न्यारे॥
जीवन सबको प्यारा होता, सब मत्यु से हैं डरते।
हैं निर्दोष सभी वे प्राणी, सभी पटाखों से मरते॥
छोटे–छोटे जीव अनंत हैं, नहीं उन्हें हम मारेंगे।
यही प्रतिज्ञा हम सब कर लें, पटाखे नहीं जलायेंगे॥

हमारे तीर्थ क्षेत्र
नैनागिरि (रेशंदीगिरि)

सिद्धक्षेत्र और अतिशय क्षेत्र नैनागिर मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले में बिजावर तहसील में स्थित है। यहाँ पर 2900 वर्ष पूर्व भगवान पार्श्वनाथ का समवशरण आया था। पंच ऋषियों ने यहाँ से मोक्ष प्राप्त किया। यहाँ पर खुदाई करने से 13 जिन प्रतिमाओं से युक्त जिनमंदिर प्राप्त हुआ। यहाँ पहाड़ी पर 38 जिनमंदिर, तलहटी में 13 जिनमंदिर और 2 मंदिर पारस सरोवर में स्थित हैं। इस तीर्थ को रेशंदीगिरि भी कहा जाता है। इस तीर्थ क्षेत्र पर आवास और भोजन की पर्याप्त सुविधायें उपलब्ध हैं। यह राष्ट्रीय राजमार्ग 86 पर है। नैनागिर से द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र 80 किमी, पपौराजी और आहार जी लगभग 120 किमी, कुण्डलपुर 120 किमी, खजुराहो 168 किमी की दूरी पर हैं।

तीर्थ हमारे प्राण हैं। तीर्थक्षेत्रों के दर्शन से विशेष पुण्य का बंध होता है और वीतराग मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती है। कषाय मंद होती है। जिन शासन की महिमा आती है।

प्यारे बच्चो! आपको हम पहले भी बता चुके हैं जब किसी जीव को आत्मज्ञान होता है तब उसके आठ अंग प्रकट हो जाते हैं। आठ अंग का अर्थात् आठ गुण। इसमें प्रत्येक अंग के बारे में एक सत्य घटना प्रसिद्ध है। इससे पूर्व हम सात अंगों की कहानियाँ प्रकाशित कर चुके हैं। इस अंक में प्रकाशित प्रभावना अंग में प्रसिद्ध कहानी –

जिनधर्म का प्रताप

अहिछत्रपुर राज्य में सोमदत्त नाम का मंत्री था। उसे संसार से वैराग्य हो गया तो उसने मुनि दीक्षा ले ली। मुनि दीक्षा लेने के कुछ समय बाद उसकी पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया। वह अत्यंत क्रोध में सोमदत्त मुनि के पास गई और बोली – जब आपको मुनि ही बनना था तो मुझसे विवाह ही क्यों किया ? मेरा जीवन क्यों बिगाडा ? अब इस पुत्र का पालन कौन करेगा ? ऐसा कहकर उस पुत्र को मुनिराज के सामने छोड़कर चली गई। उस पुत्र के हाथ पर वज्र का चिन्ह था इसलिये उसका नाम वज्रकुमार पडा। उसी समय एक विद्याधर राजा तीर्थयात्रा करने के लिये जा रहा था, उसने सुन्दर वज्रकुमार को देखा तो विद्याधर राजा की रानी ने प्यार से उठाया और अपने साथ ले गई। उस राजा के कोई संतान नहीं थी। वज्रकुमार के युवा होने पर उसका विवाह कर दिया गया। कुछ दिन बाद रानी के द्वारा उसे मालूम हुआ कि वे उसके असली माता–पिता नहीं हैं तो वज्रकुमार अपने माता–पिता की खोज में निकल गया। जब वह विमान में बैठकर जा रहा था तो उसका विमान एक जंगल में रुक गया उसने नीचे आकर देखा कि एक मुनिराज आत्मसाधना में लीन थे। उसे अपने ज्ञान से मालूम हो गया कि ये मुनिराज ही मेरे पिता हैं। अपने पिता को मुनि अवस्था में देखकर उसे भी संसार से वैराग्य हो गया और उसने मुनि सोमदत्त से मुनि दीक्षा ले ली। एक बार मुनि वज्रकुमार विहार करते हुये मथुरा नगरी में आये।

मथुरानगरी में बौद्ध धर्म को मानने वाली एक लडकी बुद्धदासी थी। वह अनाथ होने के कारण से बौद्ध मठ में रहती थी। जब वह युवा हुई तो अत्यंत सुन्दर रूपवती दिखने लगी। उसके राज्य का राजा जैनधर्म पर श्रद्धा रखता था। उसकी उर्मिला नाम की रानी थी। राजा ने उस बुद्धदासी से

विवाह करने की इच्छा प्रगट की। तब मठ के लोगों ने कहा कि हमारी एक शर्त है। यदि आप बुद्धदासी को पटरानी बनायें और स्वयं जैन धर्म त्यागकर बौद्धधर्म स्वीकार कर लें तो बुद्धदासी का विवाह आपसे हो सकता है।

बुद्धदासी की सुंदरता के कारण राजा भ्रष्ट हो गया और उसने जैनधर्म त्यागकर बौद्धधर्म स्वीकार कर लिया और उसे पटरानी बना दिया। रानी उर्मिला जैनधर्म की श्रद्धानी थी। वह प्रत्येक वर्ष अष्टान्हिका पर्व पर जिनेन्द्रभगवान की शोभायात्रा निकलवाती थी। इस वर्ष भी उसने यह आयोजन करने के लिये तैयारियाँ प्रारंभ कर दीं परन्तु बुद्धदासी ने जिनेन्द्र भगवान के रथ के आगे बौद्ध रथ निकालने की आज्ञा दी। यह सुनकर रानी उर्मिला को बहुत दुःख हुआ। उसने प्रतिज्ञा की कि जब तक संकट दूर नहीं होगा तब तक अन्न-जल का त्याग त्याग रहेगा। उसने मुनि सोमदत्त और मुनि वज्रकुमार से संकट दूर करने की प्रार्थना की। रानी उर्मिला की जिनधर्म की प्रति अगाध भक्ति देखकर मुनि वज्रकुमार अत्यंत प्रसन्न हुये और वहाँ पर आये विद्याधर राजा दिवाकर से संकट दूर करने का आग्रह किया। विद्याधर राजा दिवाकर तुरन्त अपनी सेना के साथ मथुरा नगरी पहुँचे। हजारों विद्याधर राजाओं को देखकर बुद्धदासी और राजा आश्चर्यचकित हो गये। फिर धूमधाम से जिनेन्द्रभगवान की शोभायात्रा निकली। राजा और बुद्धदासी ने यह चमत्कार देखकर जैनधर्म को स्वीकार कर लिया। हजारों जीवों ने जिनेन्द्रभगवान के पवित्र धर्म को स्वीकार किया।

इस तरह मुनि वज्रकुमार और उर्मिला रानी के द्वारा जिनधर्म की बहुत प्रभावना हुई।

अन्य धर्म ग्रंथों व वेदों में

महावीर

हे देवों के देव वर्धमान! आप सुवीर हैं, व्यापक हैं। हम सम्पदाओं की प्राप्ति के लिये इस वेदी पर घृत से आपका आह्वानन करते हैं, इसलिये सब देवता इस यज्ञ में आवें और प्रसन्न होवें।

– ऋग्वेद मंडल 2 अध्याय 1 सूत्र 3

अतिथि स्वरुप पूज्य मासोपवासी नग्न विहारी महावीर की उपासना करो, जिससे अज्ञान और मद नष्ट हो जाता है।

– यजुर्वेद अध्याय 19 मन्त्र 14

सर्वज्ञ आप्त ही उपदेशदाता हो सकता है – जैसे ऋषभ और वर्धमान।

– बौद्ध ग्रन्थ न्याय बिन्दु, अप्रेल 1995 पेज 11

प्रेरक प्रसंग

एक छोटी सी गलती

एक दिन एक बालक स्कूल से किसी की पेन्सिल उठा लाया। उसने वह पेन्सिल लाकर अपनी माँ को दिखाई। माँ ने उसे कुछ नहीं कहा। कुछ दिन बाद वह किसी दूसरे बालक की किताब चोरी करके लाया। उस समय भी माँ ने कुछ नहीं कहा। इस प्रकार उसे चोरी करने की आदत पड़ गई। अब वह बड़ा होकर बड़ी-बड़ी चोरियाँ करने लगा। चोरी, लूटपाट, किसी हत्या करना उसका सामान्य काम हो गया। एक बार वह हत्या के अपराध में पकड़ा गया और उसे फांसी की सजा हुई। फांसी से पहले उससे पूछा कि तुम्हारी कोई अंतिम इच्छा है तो कहो। हम उसे पूरी करने का प्रयास करेंगे। उसने कहा कि मैं अपनी माँ से मिलना चाहता हूँ।

उसकी प्रार्थना पर माँ को बुलाया गया। उसने माँ को अपने पास बुलाया और कान में कुछ कहने के बहाने माँ का कान काट लिया और कहा कि माँ! आज मुझे फांसी की सजा तेरे कारण मिली है। जब मैं पहली बार पेन्सिल चोरी करके लाया था तब तूने मुझे चांटा मारकर समझा दिया होता तो मैं आज यहाँ पर नहीं होता।

शिक्षा - किसी भी बुरी आदत को तुरन्त रोकें।

सम्राट है या भिखारी

सिकन्दर महान ने भारत में एक दिगम्बर साधु को देखकर कहा - जिस भारत को मैं सोने की चिड़िया कहता था, उस देश में ऐसे लोग भी रहते हैं, जिन्हें अपना शरीर ढ़ांकने के लिये और पहनने के लिये कपड़े भी नहीं मिलते।

वह मुनिराज से बोला - ऐ बाबा! मेरे देश चलो, मैं तुम्हें बहुत धन और कपड़े दूंगा।

मुनिराज बोले - जो स्वयं भूखा हो, वह दूसरों का पेट कैसे भर सकता है? जो खुद भिखारी है वह दूसरों को धन कैसे दे सकता है?

सिकन्दर गर्व से बोला - जानते हो मैं विश्व को जीतने वाला सिकन्दर महान हूँ। तुम मुझे भूखा और भिखारी समझ रहे हो।

मुनिराज ने शांत भाव से कहा- यदि तुम भूखे न होते तो अपना देश छोड़कर भारत को लूटने क्यों आते? दूसरों के धन से अपना पेट न भरते। वहाँ पेट नहीं भरा इसलिये दूसरे देश में लूटपाट करने जाते हो।

यह सुनकर सिकन्दर सोचने लगा कि शायद यही सच है।

रचनायें आमंत्रित - चहकती चेतना में प्रकाशन के लिये आपकी रचनायें आमंत्रित है। प्रकाशन के योग्य होने पर अवश्य प्रकाशित किया जायेगा।

भारत की महान जैन नारियाँ

1. श्रीमति राजमति पाटिल – इन्होने 6 अगस्त 1934 को तिलक चौक सोलापुर में तिरंगा फहराया, इसके कारण इन्हें जेल भेज दिया गया।
2. विदुषी ब्र. सुमतिबाईजी शाह – इन्हें भारत सरकार ने पद्मश्री की उपाधि प्रदान की थी।
3. श्रीरत्नीजी – महान विद्वान पण्डित आशाधरजी की माताजी थीं।
4. श्रीमति रमादेवी – दिल्ली में भारतीय ज्ञानपीठ की स्थापना करने वाली अद्भुत महिला। भारतीय ज्ञानपीठ भारत की महत्वपूर्ण साहित्य प्रकाशन संस्था है।
5. श्रीमति नन्हींबाई जैन – ऐसी नारी जिन्होंने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया। इसके कारण 18 माह 18 दिन जबलपुर जेल में गुजारे।
6. अति मब्बे – ऐसी महिला जिन्होंने सोने और रत्नों की 1000 जिन प्रतिमा बनवाकर स्थापित करवाईं।
7. नन्दयशा सेठानी – इन्होंने अपनी दोनों पुत्रियों के साथ आर्यिका दीक्षा ले ली थी।
8. तारा बाई – इन्होंने मुस्लिम शासकों से अपने पिता के राज्य को छुड़वाया था।
9. बाई तेजजी – इन्होंने बूंदी राजस्थान में सहस्रकूट चैत्यालय का निर्माण करवाया।
10. माता सरला देवी – इन्होंने गांधीजी की दांडी यात्रा के समय महिलाओं का नेतृत्व किया था।
11. विद्यावती देवड़िया – इन्हें महात्मा गांधी अपनी बेटी की तरह मानते थे। स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण 1932 में 2 माह के कठोर कारावास तथा 500 रुपये के जुर्माने की सजा हुई थी।
12. क्लीन स्मिथ – ऐसी विदेशी महिला जो बैरिस्टर चंपतराय के उपदेशों से प्रभावित होकर पूरे परिवार सहित जैन आचरण का पालन करने लगीं थीं।
13. शुभांगी जैन छिन्दवाड़ा – इन्हें 26 जनवरी 1998 को राष्ट्रीय वीरता के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

संकलन – श्रीमति स्वस्ति जैन

खेल के नियम

1. अगले पेज में प्रकाशित खेल को कम से कम 2 और अधिकतम 4 व्यक्ति खेल सकते है।
2. डाइस में 1 अथवा 6 आने पर खेल शुरु कर सकते है।
3. जिस नंबर पर अंक दिये है उन्हें जोड़ते – घटाते हुये आगे बढ़े। जो प्रतियोगी अंत पर पहुँचेगा और जिसे सर्वोच्च अंक प्राप्त होंगे वह विजयी माना जायेगा।
4. खेल के अंत में आप समझ जायेंगे कि इस बार दीपावली कैसे मनाना है।

अगर करना चाहते हो तो ये काम करो

सेवा करो	–	माँ–बाप की
ख्याल करो	–	पड़ोसियों का
आदर करो	–	बड़ों का
दोस्ती करो	–	अच्छे लोगों से
धैर्य रखो	–	संकटों में।
दूर रहो	–	पापों से।
सुधार करो	–	अपने आप में।
विश्वास करो	–	अपनी आत्मा पर।
सम्मान करो	–	वीतरागी देव–शास्त्र– गुरु का।
बचा करो	–	झूठ से।

46	47	बड़ा बम जलाया फिर से शुरू 48	49	शुभकामनायें 50
41	42	भगवान महावीर ने याद किया +5 43	44	45
36	37	38	शाम को मंदिर गये +13 39	40
31	32	33	34	दिन भर मस्ती की -10 35
26	दान दिया +20 27	28	29	रात्रि भोजन त्याग +12 30
21	22	23	बाजार में खाया -15 24	25
राकेट जलाया -15 16	17	18	प्रवचन में गये +15 19	20
11	12	जिनेन्द्र पूजन की +20 13	14	15
6	7	8	फुलझड़ी जलाई -5 9	10
जिनमंदिर गये +10 5	4	3	2	वीर प्रभु निर्वाण महोत्सव प्रारंभ 1

ईमानदारी

पण्डित गोपालदासजी बरैया प्रसिद्ध विद्वान थे। एक बार वे ट्रेन में यात्रा कर रहे थे। उस समय 3 वर्ष की आयु के बच्चे का पूरा टिकिट लगता था। उसी दिन उनका पुत्र तीन वर्ष का हुआ था। ट्रेन में जब उन्हें यह मालूम हुआ तो वे तुरन्त अपने बच्चे का टिकिट ले आये और बोले जब रेलवे विभाग के नियम के अनुसार तीन साल के बच्चे का पूरा टिकिट लगता है तो मैं बेईमानी कैसे कर सकता हूँ ? पण्डितजी के उच्च विचार देखकर अन्य यात्री आश्चर्यचकित हो गये। उस समय यह घटना समाचार पत्र में प्रकाशित हुई थी।

धन्य हैं बनारसीदासजी

बादशाह अकबर के समय में पण्डित बनारसीदासजी भी एक रत्न थे। पण्डित बनारसीदासजी मात्र जिनेन्द्र परमात्मा को नमस्कार करते थे। एक बार उन्हें अकबर ने राजदरबार में बुलाया। अकबर ने महल का बड़ा गेट बंद करवा दिया और छोटा गेट खुलवा दिया। जिसमें से कोई भी झुककर ही आ सकता था। अकबर ने सोचा कि अब तो बनारसीदास को झुकना ही पडेगा। जब बनारसीदास आये तो अकबर की योजना समझ गये। बनारसीदासजी ने पहले अपना पैर अदंर किया और सिर ऊंचा करके अंदर आ गये। अकबर यह देखकर प्रसन्न हो गये और बनारसीदासजी से बोले – आज मैं आपसे बहुत प्रसन्न हूँ। जो आप मांगेंगे वह मैं दूंगा। पं. बनारसीदासजी ने विनम्र भाव से कहा कि बादशाह! यदि आप कुछ देना चाहते हैं तो आज के बाद मुझे राजदरबार में आने के लिये न कहा जाये। अकबर ने पूछा कि आप घर में रहकर क्या करेंगे ? पण्डितजी ने उत्तर दिया – घर पर रहकर मैं जिनवाणी के अध्ययन में अधिक समय व्यतीत करुँगा।

ऐसे थे हमारे पण्डित बनारसीदासजी।

पद्मावती देवी की स्थापना कैसे प्रारंभ हुई ?

अंतिम मौर्य सम्राट ब्रह्मरथ को उनके सेनापति पुष्पमित्र ने धोखे से मार डाला और स्वयं राजा बन गया। उसने जैनियों को पकड़ कर जनेऊ(एक धागा जिसे ब्राह्मण अपने गले में पहनते हैं) पहनाकर दुर्गा देवी की पूजा करवाई। जिसने यह नहीं किया उसे मरवा दिया तब जैनियों ने अपने प्राण बचाने के लिये दुर्गा देवी को पदमावती मानकर अपने मंदिरों में स्थापित करके पूजना प्रारंभ कर दिया तभी से धर्म के रूप में पदमावती की पूजा का प्रचलन प्रारंभ हो गया।

– सन्मति संदेश 1997 से साभार

महाभारत युद्ध के दुष्परिणाम

कौरवों की 11 अक्षोहिणी सेना थी और पाण्डवों की 7 अक्षोहिणी सेना थी। एक अक्षोहिणी सेना में 21,870 रथ एवं 21,870 हाथी, 6,510 घोड़े और 1,09,350 पैदल सैनिक थे।

दोनों पक्षों में 18 दिन तक युद्ध हुआ, जिसमें कौरव सेना के सेनापति 10 दिन तक भीष्मपितामह, 5 दिन तक द्रोणाचार्य, डेढ दिन तक शल्य और आधे दिन तक दुर्योधन बने।

इस युद्ध में 66 करोड़ 6 लाख 20 हजार सैनिक मारे गये। 24,165 योद्धा भाग गये। कौरवों और पाण्डवों के मित्र राजा भी अपनी सेना लेकर सहयोग करने आये थे। इन राजाओं के सैनिक इनसे अलग थे जो युद्ध में मारे गये।

समस्त विद्वानों के आध्यात्मिक प्रवचनों और भजन पूजन की
सी.डी./डीवीडी प्राप्त करने के लिये संपर्क करें
093721194832, 09503683353

पुण्य की नौकर है लक्ष्मी

हैदराबाद (सिन्ध प्रान्त) में एक वीरुमल जैन नाम का प्रसिद्ध व्यापारी था। लगभग 80 वर्ष पूर्व उनका करोड़ों का व्यापार था। वे धार्मिक, देश भक्त, दानी और गरीबों की सहायता करने वाले व्यक्ति थे। हर साल वे लाखों रुपये का दान करते थे। गरीबों को रुपये देकर कभी नहीं मांगते थे। योग्य व्यक्तियों को नौकरी, व्यापार आदि में सहायता करना, विधवाओं, रोगियों की सहायता करना, अपने कर्मचारियों से मित्र जैसा व्यवहार करना, मीठा बोलना, जिनधर्म की प्रभावना करना, साधारण जीवन आदि उनकी अनेक विशेषतायें थीं।

एक बार उन्हें व्यापार में लाखों रुपये का घाटा हो गया। उनके मुनीमों ने मिलकर सेठजी से कहा कि सेठजी! आप सहायता और दान का कार्य कुछ समय के लिये बंद कर दीजिये अन्यथा आपको व्यापार के लिये दूसरों से धन मांगना पड़ेगा, अपना व्यापार भी बंद करना पड़ सकता है।

सेठजी ने उत्तर दिया कि मुनीमजी ! आप लोगों को अपने भाग्य पर विश्वास नहीं। जब यह धन अपने आप चला जाता है तो क्यों न अपने हाथ से देकर विदा किया जाये और जब भिखारी अपना पेट भर लेते हैं तो क्या हमारी भोजन की व्यवस्था नहीं हो पायेगी ? हम तो संसार में खाली हाथ ही आये थे।

मुनीमों ने फिर से समझाया कि सेठजी! संसार में गृहस्थी के कार्य में धन की आवश्यकता होती है। हम कोई साधु तो हैं नहीं जो धन के बिना हमारा काम चल जायेगा।

सेठजी ने फिर समझाते हुये कहा – मुनीमजी! जिस जीव के पुण्य का उदय उसके घर में लक्ष्मी, धन–वैभव अपने आप आयेगा। हमारे न चाहने पर भी धन आयेगा। जब तीर्थंकर परमात्मा के पुण्य का उदय आता है तो स्वर्ग से देव आकर समवशरण आदि की अद्भुत रचना करते हैं और जब पाप का उदय आता है तो कितनी भी संपत्ति जमा की हो सब चली जाती है। रामचंद्रजी रात्रि में सुबह होने वाले राजतिलक की तैयारी कर रहे थे और सुबह होते ही राज्य नहीं मिला वनवास मिला।

इसलिये हमें यह समझ लेना चाहिये कि लक्ष्मी पुण्य की नौकरी करती है। वह हमारी इच्छा से नहीं आती–जाती। हमारा काम तो अच्छे परिणाम रखना है और समता धारण करना है। आप दान आदि के कोई भी काम बंद न करें।

परफ्यूम क्या है

परफ्यूम एक तरल पदार्थ है जो हवा के संपर्क में उड़ जाता है। यह मनुष्य की त्वचा पर हानिकारक नहीं होता, लोग इसे सुंगध बिखेरने के लिये प्रयोग करते हैं।

1. जब वेहिकिल को लेते हैं तो यह हवा के संपर्क में उड़ने लगता है। यह एक प्रकार का विलायक है।
2. जब एल्कोहल को पानी में मिलाते हैं वो वेहिकल बनता है।
3. जब वेहिकिल में कुछ तेलों को मिलाते हैं वह रंगहीन हो जाता है।
4. कुछ तेल विशेष होते हैं – मस्ककीटोन, कामेरिन, एस्टर, ऐमिल बेंलोरुत, बेंजोफिनोन, इंडॉल इत्यादि।
5. परफ्यूम में कुछ आवश्यक पदार्थ मिले होते हैं–

कैस्टर – यह बिएवर जंतु के पेरिनियल के ग्लैंड से प्राप्त होता है, इसमें बेंजिल एल्कोहल और एसितोफिनॉन होता है।

मस्क जिवेटा – यह मस्करत जंतु के ग्लैंड से प्राप्त होता है इसमें किटोन होता है।

सिवेट – यह भालू के पीटयूटरीयल ग्लैंड में पाया जाता है, इसमें भी साइक्लीक कीटोन होता है।

एम्बर गिस – यह व्हेल मछली के सिक्रीसन से प्राप्त होता है, इसमें 85 प्रतिशत टरपीनॉयड तथा 15 प्रतिशत सक्रिय यौगिक होता है।

क्या आप अपने शरीर को सुगंध के लिये परफ्यूम का प्रयोग करेंगे ? – जरा विचार कीजिये।

समाचार पत्र – आज का आनंद से साभार

पैगम्बर का संदेश

मुसलमान के पवित्र ग्रन्थ कुरान की आयत में लिखा है कि तुम्हारे लिये मुर्दा पशु का मांस, रक्त और अन्य वस्तुयें हराम (मना) हैं। जिन्हें किसी ने कत्ल कर दिया है, पीटकर मारा है या उसकी जान निर्दयतापूर्वक ली गई है या ऊपर से गिरकर मरा है या किसी जंगली जानवर ने उसका कुछ मांस खा लिया हो – वह समस्त मांस इस्लाम में खाने से मना किया गया है। कुरान कहता है कि कयामत के दिन सभी मारे गये प्राणियों में जान आ जायेगी और तब वे उनसे उस दिन बदला लेंगे, जिन्होंने उसे कष्ट दिया है या मारा है।

सूरा अल आनम में कहा गया है कि धरती पर रहने वाले सभी जानवर, कीड़े, पक्षी, पानी में रहने वाले सभी जीव इंसान की तरह हैं। हमें कोई अधिकार नहीं कि हम उनके जीवन को नष्ट कर दें। किसी के शानदार जीवन को नष्ट करने का हमें कोई अधिकार नहीं है।

कुरान कहता है कि जो निर्दोष और असहाय जीवों को मारते या सताते हैं, उनको दंडित किया जाना चाहिये। कुरान के अनुसार – ईश्वर कहता है कि जो अच्छी वस्तुयें भोजन के लिये हमें मिलीं हैं उन्हें खाओ। उस रक्त और मांस का उपयोग मत करो, जिसके लिये उसने मनाही की है। कुरान में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जानवरों का रक्त भी तुम्हारे लिये प्रतिबंधित है। जब रक्त के लिये प्रतिबंध है तो मांस कैसे खा सकते हो ?

शेख ख्वाजा मुईनुददीन चिश्ती, हजरत निजामुद्दीन ओलिया, अली कलंदर शाह इनायत, मीर दाद, शााह अब्दुल करीम जैसे अनेक सूफी संत जीवन भर मांसाहार से दूर रहे।

प्रसिद्ध सूफी संत मीर दाद कहते हैं कि जो कोई जीवित प्राणी का मांस खाता उसे अपने शरीर का उतना मांस देकर प्रायश्चित करना होगा। तुम जैसा कष्ट दूसरे प्राणियों को दोगे तुम्हें वैसा ही कष्ट भोगना होगा यह ईश्वर का कानून है। संत कबीर कहते हैं कि यदि किसी ने रोजा (उपवास) किया हो और उसके सामने किसी प्राणी के मांस सम्बन्धी शब्द निकल जायें तो रोजा भंग हो जाता है। फिर मांस खाने का तो सवाल ही नहीं होता।

कुरान में कहा गया है कि अल्लाह तक न तुम्हारा मांस पहुँचता है और न ही रक्त। केवल दया ही अल्लाह तक पहुँचती है। किसी भी सांस लेने वाले प्राणी को मारना, मां–बाप का कहना न मानना सबसे बडा गुनाह माना गया है।

चिंरजीलालजी बगड़ा, कोलकाता
आभार – स्वतंत्र जैन चिन्तन (मासिक पत्रिका)

काश्मीर-श्रीनगर जैनों ने बसाया था

प्राचीन काल में जैनों का प्रभाव बहुत अधिक था। कवि कल्हण ने राजतरंगिणी में स्पष्ट करते हुये लिखा कि काश्मीर को राजा अशोक ने बनाया था। यह राजा जैन धर्म का बहुत बडा उपासक था। इस राजा ने काश्मीर में बहुत बड़ा जैन मंदिर और दो भव्य स्तूप बनवाये थे। राजतरंगिणी के टीकाकार रामतेजशाास्त्री पाण्डेय ने लिखा है कि राजा अशोक ने जैन धर्म को स्वीकार करके दो स्तूप बनवाये और वितस्तात्रपुर के धर्मारण्य विहार में इतना ऊँचा मंदिर बनवाया जिसकी ऊँचाई का निर्णय करने में दर्शकों की आंखें असमर्थ हो जातीं थीं।उस राजा ने छियानवे लाख रुपये खर्च करके भवनों से विभूषित भव्य श्रीनगर नगर बसाया।

राजतरंगिणी में जयेन्द्रनाम के राजा का वर्णन मिलता है। यह राजा भी जैन था और सब कुछ लुट जाने के बाद जैन मुनिराजों के साथ ही रहने लगा था। इस तरह अनेक उल्लेखों से स्पष्ट होता है कि कश्मीर और श्रीनगर में जैन मुनियों का विहार होता था। बाद में भट्टारकों ने काश्मीर में अनेक मठ बनवाये थे।

– आचार्य विद्यानन्दजी मुनि
– स्वतंत्र जैन चिन्तन

पत्रिका से साभार

वे कौन थे ?

1– वे कौन थे जिन्हें अपने 60,000 हजार पुत्रों की मृत्यु का समाचार सुनकर वैराग्य हो गया था ?

उत्तर – सगर चक्रवर्ती।

2– वे कौन थे जिन्होंने क्रोध के कारण मुनिराज पर कुत्ते छोड़ दिये थे?

उत्तर – राजा श्रेणिक।

3– वे कौन थे जिन्होंने दान में 1 रुपये मिलने पर उसके 64 पोस्टकार्ड लिखे और जैन धर्म की शिक्षा के लिये दान मंगाया था और पूरे देश में जैन विद्यालयों की स्थापना की ?

उत्तर – क्षुल्लक गणेशप्रसादजी वर्णी।

4– वे कौन थे जिन्हें झूठ बोलने के कारण राजा ने तीन थाली गोबर खाने की सजा दी थी ?

उत्तर – श्रीभूति पुरोहित।

5– वे कौन थे जिन्होंने फल के लोभ में आकर णमोकार मंत्र का अपमान किया और नरक चले गये ?

उत्तर – सुभौम चक्रवर्ती।

6– वे कौन थे जिन्हें मुनि निन्दा के फल में सात दिन में कोढ़ हो गया और मरकर वे गधा बन गये ?

उत्तर – वायुभूति।

7– वे कौन थे जिनका उपदेश सुनकर कवि बनारसीदासजी श्वेताम्बर से दिगम्बर हो गये थे ?

उत्तर – श्री रूपचंदजी।

8– वे कौन थे जो अष्टमी और चतुर्दशी का श्मशान में सामायिक करते थे ?

उत्तर – सेठ सुदर्शन।

9– वे कौन थे जिनके 6 भाई उसी भव से मोक्ष गये और वे स्वयं नरक गये ?

उत्तर – श्रीकृष्ण

10– वे कौन थे जो एक मुनि को जलाकर स्वयं मुनिराज बन गये थे ?

उत्तर – कपिल ब्राह्मण।

सदस्य ध्यान दें - जिन सदस्यों की सदस्यता अवधि पूर्ण हो गई है वे अपना सदस्यता शुल्क भेजें अन्यथा आगे पत्रिका भेजना संभव नहीं होगा। पत्रिका का तीन वर्ष का शुल्क 300/–रु. दस वर्ष का शुल्क 1500/– आप अपनी राशि चेक / ड्राफ्ट द्वारा भेज सकते है। कोर बैंकिंग वाले चेक ही स्वीकार किये जायेंगे। आप यह राशि पंजाब नेशनल बैंक, बड़ा फुहारा, जबलपुर के बचत खाता क्रमांक 1937000101030106 में जमा कर सकते है।

बंधा कौन

एक व्यक्ति ने पशुओं के मेले से एक गाय खरीदी। उसके मुंह पर रस्सी की जाली थी और गले में एक रस्सी थी, उस रस्सी को पकड़कर वह आदमी गाय को खींचता हुआ ले जा रहा था। रास्ते में आराम करने के लिये रुका तो एक महात्मा पास आकर पूछा – ''तुमने गाय को बांधा है कि गाय ने तुझे बांधा है।''

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया – '' यह तो साफ दिखाई दे रहा है कि गाय को मैंने बांधा है। इसमें पूछने की क्या बात है''

महात्माजी बोले – ''नहीं, तुम्हें गाय ने बांधा है।''

उस व्यक्ति ने पूछा – कैसे?

महात्मा ने कहा – ''यदि गाय रस्सी तुड़ाकर दौड़ने लगे तो तुम गाय के पीछे भागोगे या गाय तुम्हारे पीछे?''

व्यक्ति ने कहा – ''महाराज! मैं गाय के पीछे भागूँगा क्योंकि गाय मेरी है।''

महात्मा ने फिर पूछा – यदि तुम कहीं पर जाओ तो क्या गाय अपने आप तुम्हारे पीछे आयेगी?

व्यक्ति ने कहा – नहीं महाराज!

महात्मा मुस्कराते हुये बोले – फिर तुम कैसे कहते हो कि गाय को मैंने बांधा है? वास्तव में तू ही गाय से बंधा है।

ऐसे ही संसार की कोई वस्तु को हमने नहीं बांधा। बल्कि अपने अज्ञान भाव से हम स्वयं ही बंधे हैं।

वाह रे लोभ

धन कमाने के लोभ में आज व्यक्ति हर पाप करने तैयार है, उसे इंसानों का जीवन नष्ट करने में संकोच नहीं होता।

पिछले दिनों भारत के अनेक नगरों में फूड एण्ड ड्रग विभाग ने खाद्य पदार्थों में शिकायत के आधार पर अनेक दुकानों और फैक्ट्रियों में खाद्य पदार्थों की जाँच की। जिसमें अनेक आश्चर्यचकित करने वाले रहस्य सामने आये। मिलावटी सामान का विक्रय करने वाले अनेक व्यक्तियों को पकड़कर जेल भेज दिया गया। आप भी जानिये लोभ की पराकाष्ठा –

मिलावटी घी - दिल्ली, पानीपत, जबलपुर में नकली घी बनाने के कारखाने पकड़े गये। इसमें कुछ व्यक्ति असली शुद्ध घी में डालडा वनस्पति घी को मिलाते थे। दिल्ली में

पकडे गये एक व्यक्ति के अनुसार वे बूचडखानों (जहाँ पर पशुओं को काटा जाता है) से हड्डियाँ खरीदते थे और उन हड्डियों को 8 से 10 घंटे पानी में उबाला जाता था। इतने समय तक उबलने के पश्चात् उन हड्डियों से घी जैसा पदार्थ बन जाता है। जो देखने में और स्वाद में असली घी जैसा दिखाई देता है। घी की गंध के लिये ये ऐसेंस और केमिकल्स का प्रयोग करते थे। वे इस घी को बड़ी–बड़ी कंपनियों के नाम से पैक करके बाजार में बेचते थे। जुलाई माह में अपराधियों ने स्वयं जी न्यूज चैनल पर घी बनाकर दिखाया था। जबलपुर में 1500 टीन घी, श्रीनगर में एक ट्रक, भिंड में 200 क्विंटल घी पकड़ा गया। अनेक स्थानों पर गाय और सुअर की चर्बी भी घी में मिलाई जा रही है।

चाय - दिल्ली के पास भटिण्डा नाम का स्थान है। यहाँ पर रेलवे स्टेशन पर नकली दूध की चाय बनाने का काम कुछ लोग अनेक वर्षों से कर रहे थे। ये लोग केमल कम्पनी के पेन्टिंग करने वाले सफेद कलर की शीशी लाते थे। एक शीशी सफेद कलर को 20 लीटर

पानी में मिलाया जाता था। दूर से देखने में वह दूध जैसा दिखाई देने लगता था। उस सफेद पानी की चाय बनाकर स्टेशन पर बेचते थे। किसी को शक न हो इसलिये वे चाय में इलायची आदि सुंगधित पदार्थ डालते थे और 4 रु. में एक कप चाय बेचते थे। मात्र 8 रु. के रंग से बने दूध से हजारों रुपये प्रतिदिन कमाये जा रहे थे। यात्री जब चाय पीता था तो उसे नकली दूध की चाय होने की पहचान नहीं होती थी। यदि किसी को चाय पसंद न आये तो वह किससे शिकायत करता ? ट्रेन तो आगे बढ जाती।

चाकलेट - जयपुर में एक चाकलेट बनाने फैक्ट्री पर छापा मारा गया तो वहाँ पर अनेक प्रकार की चाकलेट बन रहीं थीं। जिसमें अनेक प्रकार के केमिकल्स मिलाये जा रहे थे। इन केमिकल्स से चाकलेट का स्वाद अच्छा बन जाता था। जिससे बाजार में उनकी बिक्री बढ़ जाती थी। परन्तु यह केमिकल्स बच्चों के स्वास्थ्य पर बहुत बुरा असर डालने वाले होते हैं, इनसे बच्चों की जान भी जा सकती है।

दूध - महानगर मुम्बई के चारकोप कांदिवली में नकली दूध बनाने वाले एक गिरोह को पकडा गया। ये लोग घर पर नकली दूध बनाते थे और बड़ी-बड़ी कम्पनियों अमूल, गोदावरी आदि के नकली पैकेटों में पैक करके बेचते थे। यदि कभी पकड़े गये तो हजार-पांच सौ रुपये देकर छूट जाते थे। इनके घर से 1500 पैकेट नकली दूध पकड़ा गया और अनेक खाली पैकेट जब्त किये गये।

दूध पाउडर - अभी मालूम हुआ कि विदेशी कम्पनियों के दूध पाउडर में मुर्गे से तैयार किया हुआ चिकन पाऊडर मिलाया जा रहा है।

जीरा - धना - जयपुर में मसालों में मिलावट करने वाले एक गिरोह को पकड़ा गया। ये लोग पिसे हुये धना और जीरे में कचरा मिलाकर बेचते थे।

इनके पास से 20 बोरे कचरा पकड़ा गया। इनके पास कचरे और धना को मिलाने वाली मशीन पकड़ी गई। आश्चर्य की बात तो यह कि ये अपराधी जयपुर के अनेक प्रतिष्ठित व्यापारियों को माल देते थे।

दाल - जुलाई एक सडी दाल बेचने वाले 3 व्यक्तियों को पकड़ा गया। ये लोग सड़ी और खराब दाल को बाजार से कम मूल्य पर खरीदते थे और उस दाल को मशीनों से रंग मिलाकर चमकाते थे और कम मूल्य पर खरीदी गई खराब दाल को बाजार मूल्य से कम मूल्य पर व्यापारियों को दे देते थे। जब इस दाल को पानी में डाला गया तो दाल का रंग निकल गया।

नकली गुड़ - हरियाणा के समलखा नगर में नकली गुड़ बनाने वाली अरुण ब्रदर्स और मेसर्स महोदव नाम की दो फैक्टरियां पकड़ी गई यहां पर बड़ी मात्रा में नकली गुड़ बनाया जा रहा था। इन फैक्ट्री के मालिकों अरुण और नवीन बंसल को गिरफ्तार कर लिया गया है। इनके अनुसार ये लोग शक्कर के कारखानों से बचा हुआ कचरा खरीदते थे और उस कचरे में सल्फर, शीशा, रंग आदि वस्तुयें मिलाकर गर्म करते थे और गुड़ बनाते थे। ये लोग इस गुड़ को उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, पंजाब, मध्यप्रदेश आदि प्रांतों में भेजते थे।

अहिंसा प्रेमियों और शाकाहारियों की मांग पर सभी प्रकार के खाद्य पदार्थों पर मांसयुक्त पदार्थ पर लाल निशान और शाकाहारी पदार्थ पर हरा निशान लगाना अनिवार्य कर दिया था लेकिन कम्पनियों ने जनता भ्रमित करने के लिये अनेक उपाय खोज लिये हैं। बेकरी उत्पादन और पेय पदार्थ आदि में इमल्सीफायर, स्टबलायइर्स कँडीशनर्स, ऑसिडीटी, रेग्युलेटर्स, प्रिजरवेटीज, एंटीऑक्साहडंट, थिकनरर्स, जिलेटीन, स्विटनर्स, कलर्स, फ्लेवर्स आदि शीर्षक नाम के लिये दिये जाते हैं। कंपनियां इसमें मिश्रण के लिये आवश्यक पदार्थ सीधे विदेश से आयात कर रहीं है। जिनमें से अधिकांश पदार्थ मांस अथवा चर्बी से बने हैं।

मैगी, अपी फी, कोल्डड्रिंक, ब्रिटानिया, हाइड एण्ड सीक, गुड डे, बबल गम, च्युइंगम, टूथपेस्ट, चिप्स, वनस्पति, बेकिंग पाउडर आदि अनेक पदार्थों में अजीनामोटो

सॉस और प्राणियों से बने ऑडिक्टिव्हज् मिलाये जा रहे हैं। इस पर लोकसभा में भी चिन्ता व्यक्त की गई है।

बटर और घी में गाय की चर्बी मिलाई जाती है जिससे उसकी चिकनाई बढती है। वनस्पति घी में गाय की चरबी, छाछ तथा सेंट डालकर गर्म किया जाता है। कई होटलों में नान, पराठा, कुलचा में चरबी मिलाई जा रही है। चायनीज फूड में 90 प्रतिशत मांस

का मिश्रण होता है। कुछ दिनों पूर्व मुम्बई के मेकडोनाल्ड में बिक रहे बर्गर, पिज्जा, बड़ापाव में गाय की चरबी पाई गई थी । जिससे नाराज होकर राजनीतिक पार्टी शिवसेना के कार्यकर्ताओं ने मेकडोनाल्ड के कई शोरुम में तोड़-फोड़ की थी।

रेडीमेड ग्रेवी में कई कंपनियाँ मांस का मिश्रण कर रहीं हैं। कई पेस्ट में मछली का तेल मिलाया जा रहा है । अनजाने में जैन भाई मांसाहार का सेवन कर रहे हैं। रिलायंस जैसी कम्पनियाँ मांसाहार से युक्त नॉनवेज मॉल खोलने की तैयारी में हैं।

यदि आप शाकाहारी हैं तो इन मांसवाले पदार्थों से कैसे बचें यह सोचने का विषय है। जितना हो अपने विवेक का उपयोग करें और बाहर होटलों के भोजन करने से बचें। जहाँ तक संभव हो घर में ही बना भोजन करें। स्वयंकी सावधानी ही इनसे बचने का एकमात्र उपाय है।

विराग शास्त्री
- विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और टी.वी. से
प्राप्त सूचनाओं के आधार पर

यदि आपके पास इस तरह की कोई भी जानकारी है तो आप हमें प्रमाण सहित लिखकर भेजें हम उसे अवश्य प्रकाशित करेंगे ।

आपके ब्रश से

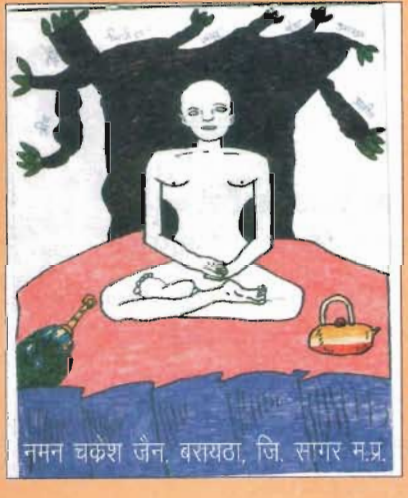

PAINTING

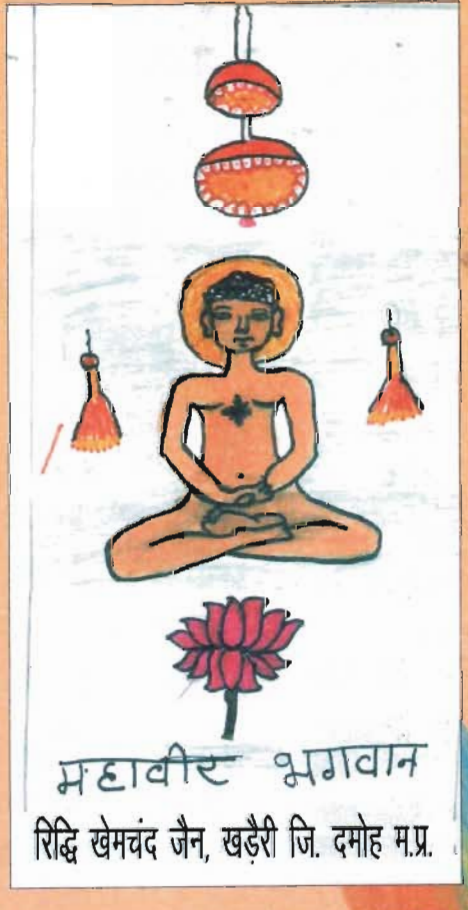

आपके प्रश्न हमारे उत्तर

प्रश्न–1. क्या सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र प्राचीन काल से उसी अवस्था में अभी तक स्थित है ?

– ऋद्धि जैन, कोलकाता

उत्तर– पर्वतों के आकार प्रकार बदल जाते हैं, परन्तु स्थान वही रहता है।

प्रश्न–2. भव्य और अभव्य में क्या अंतर है? – जीत शाह , मुम्बई

उत्तर – भव्य मोक्ष जा सकता है और अभव्य मोक्ष नहीं जा सकता है।

प्रश्न –3. भारत में जैन तीर्थ स्थल किस प्रांत में सबसे अधिक किस प्रान्त में अधिक हैं ?

उत्तर – मध्यप्रदेश में। – पूजा कलमने, अकोला

प्रश्न – 4. देवता और भगवान में क्या अन्तर है ? – विनोद जैन, हजारीबाग

उत्तर – देवता हमारी तरह संसारी होते हैं और भगवान सर्वज्ञ, मोक्षगामी और पूर्ण सुखी होते हैं।

प्रश्न – 5. हम सत्य से डरें या झूठ से ? – आयुषी बड़जात्या, खरगौन

उत्तर – आप सत्य को अपनाइये, झूठ अपने आप डरने लगेगा।

प्रश्न – 6. क्या टी.वी. देखकर हमारे परिणाम होते हैं ? – विमला सिंघई, चेन्नई

उत्तर – टी.वी. देखकर परिणाम खराब नहीं होते, खराब परिणामों में टी.वी. देखने के परिणाम होते हैं।

यदि आपके मन में किसी भी प्रकार का कोई प्रश्न हो तो आप हमें लिख भेजें हम उसका उत्तर प्रकाशित करेंगे।

इससे पूर्व आपने पढ़ा – भगवान महावीर के दीक्षा प्रसंग पर इन्द्रों और मानवों के बीच पालकी पहले उठाने पर विवाद हो रहा था। परंतु निर्णय मानवों के पक्ष में हुआ। अब आगे –

उत्तम संयम धर्म

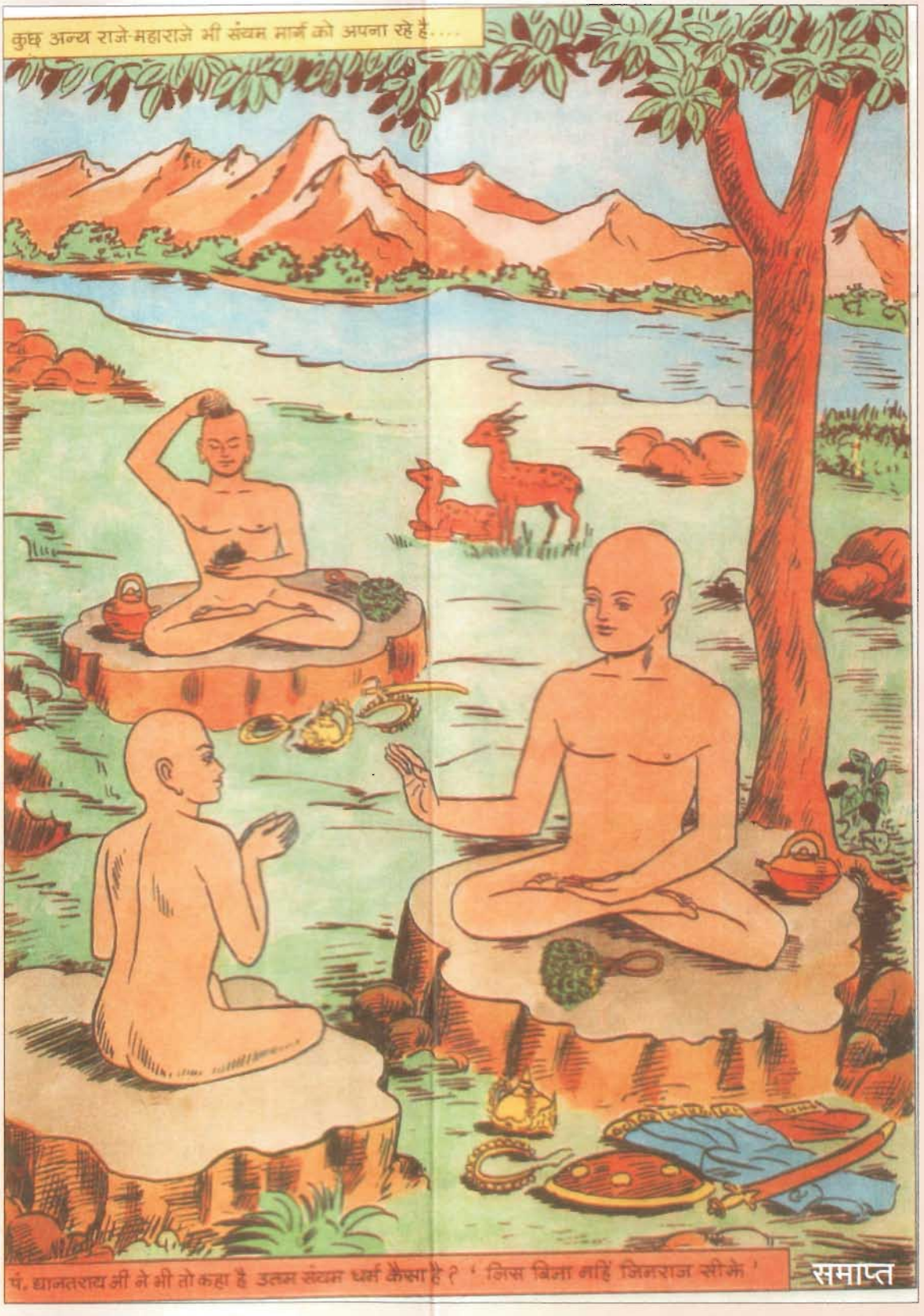
कुछ अन्य राजे-महाराजे भी संयम मार्ग को अपना रहे हैं....
पं. द्यानतराय जी ने भी तो कहा है उत्तम संयम धर्म कैसा है ? ' तिस बिना नहिं जिनराज सीझे '
समाप्त